संविदा पर नियोजित शिक्षकों के कार्य-संतुष्टि और कार्य-अभिप्रेरणा का आकलन

प्रीति कुमारी
शोधार्थी,बाबा साहेब भीम राव अम्बेदकर, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र संविदा पर आधारित कार्य शिक्षकों के कार्य संतुष्टि और कार्य अभिप्रेरणा से संबंध है जिसके आकलन के लिए दक्षिणी बिहार के गया जिले के फतेहपुर थाना क्षेत्र के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष पर आधारित है। प्रेरणा शिक्षकों के लिए शिक्षण कार्य को सरल बनाने के लिए एक मजबूत घटक है। यदि प्रेरणा मजबूत एवं शक्तिशाली है तो शिक्षक को समस्त शिक्षण के कार्य सरल एवं आरामदायक हो जाते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि संविदा आधारित नियोजित शिक्षक एक वैकल्पिक व्यवस्था हो सकती है परंतु स्थाई नहीं।

शब्द कुंजीः शिक्षक, संविधाा, अनुबंधित, नियोजित, अभिप्रेरणा, असमानता

परिचयः

संविदा का अर्थ या आशय है दो या दो से अधिक व्यक्तियों या पक्षों के बीच किया गया अनुबंध से है; जिसके लिए दोनों पक्ष कानूनी रूप से जिम्मेदार होते हैं एवं दोनों पक्ष अनुबंध के अपने पक्ष का पालन करने के लिए बाध्य होते हैं। संविदा आधारित कर्मचारी अस्थाई तौर पर नियुक्त किए जाते हैं, जो कुछ निश्चित नियमावली के तहत काम करते हैं।

प्रस्तावना :- यह शोध-पत्र संविदा आधारित नियोजित शिक्षकों के कार्य-संतुष्टि और कार्य-प्रेरणा से संबंधित है।

संविदा पर आधारित नियोजित कर्मचारी तीन प्रकार के होते हैं-

(1) निश्चित शर्त योगयता साक्षात्कार और निश्चित नियमावली के तहत कार्य करते हैं जो सामान्य या स्थायी कर्मचारी की तरह कार्य करते हैं जो सामान्य या स्थायी कर्मचारी की तरह ही सेवा शर्तों और समय अवधि कार्य की प्रकृति का पालन करते हुए कार्य करते हैं। समय पर उनकी सेवा का रिन्यूअल ही किया जाता है।

(2) इस तरह के कर्मचारियों की नियुक्ति, कार्य विशेष के लिए किया जाता है एवं कार्य समाप्त होते हैं उन्हें हटा दिया जाता है।

(3) इस तरह के कर्मचारी वैसे कर्मचारी होते हैं जो गलत तरीके से बिना योग्यता और शर्त के कार्य में शामिल हो जाते हैं जो किसी भी शर्तों का पालन नहीं करते हैं।

अनुबंधित कर्मचारी वर्तमान समय में अक्सर राज्य सरकारों या केन्द्र सरकार द्वारा विभिन्न विभागों में अंशकालीन या अस्थाई नौकरियों की भर्ती के लिए प्रयोग किया जाता है। संविदा पर शिक्षक, संविदा पर इंजीनियर, संविदा पर डॉक्टर, संविदा पर कर्मचारी, लगभग हर विभागों में सबसे अधिक प्रचलित शब्द बन गया है। सरकार द्वारा संविदा के संबंध में सरकार द्वारा संविदा के संबंध में नियम कानून भी पारित किए गए हैं, जैसे भारतीय संविदा अधिनियम, 1872 के नाम से जाना जाता है।

संविदा पर चयन :

जिस प्रकार अस्थाई सरकारी नौकरियों के लिए अधिसूचना जारी की जाती है ठीक उसी प्रकार कॉन्ट्रैक्ट

जॉब के लिए भी सरकारी संगठन या संबंधित संगठन समय-समय पर अधिसूचना जारी करते हैं। वेतन की बात की जाए तो उनका वेतन सामान्य नियमित कर्मचारियों की तुलना में बेहद कम है। आज कर्मचारियों की तुलना में बेहद कम है। आज कर्मचारियों की जागरूकता और शोषण के विरुद्ध संघर्ष के लिए विभिन्न संगठनों द्वारा विरोध किया जाने लगा है और यह मुद्दा न्यायालय तक पहुँच गया समान काम समान वेतन के रूप में।

शिक्षा के क्षेत्र में संविदा पर आधारित नियोजित शिक्षकों की बहाली हमारा शोध का विषय है। बिहार में 2006 संविदा आधारित नियोजित शिक्षकों को बहाल किया जा रहा है जो निश्चित अवधि और निश्चित शर्तों के साथ लेकिन उनका समय-समय पर निन्यूअल होता रहा है। रिन्यूअल के बावजूद नियुक्ति को अस्थाई ही रखा जाता रहा है। हालांकि समय-समय पर इस कार्य के लिए दिए जाने वाले Honorarium में बढ़ोतरी भी की जाती है। इस तरह की नियुक्ति का मुख्य उद्देश्य तत्कालिक शिक्षकों की कमी को दूर किया जाना है। शिक्षा के क्षेत्र में इस तरह के कार्य, को एक सकारात्मक कदम माना जाना चाहिए। परंतु यहाँ यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि इसी कार्य के लिए जो स्थाई शिक्षक हैं, उन्हें उसी सेवा शर्तों के लिए, जो सैलरी दी जाती है, उसने बहुत भिन्नता या अंतर पाया जाता है। हालांकि इस नियुक्ति की प्रक्रिया से पठन-पाठन का कार्य सुचारू रूप से चलने लगा। और समयानुसार शिक्षा की गुणवत्ता को देखते हुए इसके नियमावली में बदलाव लाए गए जैसे शिक्षक पात्रता परीक्षा और चयनित शिक्षक जो पहले से बहाल थे उनके लिए शिक्षक दक्षता परीक्षा जिससे शिक्षा की गुणवत्ता और उनके कौशल में वृद्धि की जा सके। इस प्रकार पठन-पाठन की प्रक्रिया चलने लगी लेकिन, समय के साथ-साथ संविदा आधारित शिक्षकों में असंतोष को देखते हुए यह शोध प्रासंगिक हो गया। इस शोध पत्र को लिखने का उद्देश्य संविदा आधारित नियोजित शिक्षकों के कार्य-संतुष्टि और कार्य अभिप्रेरणा क्या सामान्य शिक्षकों की भांति रहती है? या उनमें कमी पाई जाती है। शिक्षा की गुणवत्ता पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है? इन सभी तथ्यों की सत्यता को जानने के लिए शोध की आवश्यकता है।

संविदा आधारित नियोजित शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और कार्य अभिप्रेरणा पर क्या प्रभाव पड़ता है! क्या नियमित बाहर शिक्षकों की भांति उनमें कार्य संतुष्टि होती है क्या शिक्षा की गुणवत्ता पर इसका प्रभाव पड़ता है। इन सभी तथ्यों की सत्यता को जानने के लिए शोध की आवश्यकता है।

शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों की नियुक्ति प्रक्रिया भी अलग-अलग प्रकार से होने लगी शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों की नियुक्ति प्रक्रिया भी अलग-अलग तरह से होने से जैसे संवदिा आधारित नियोजित शिक्षक रेगुलर शिक्षक दक्षता परीक्षा पास शिक्षक अतिथि शिक्षक आदि विद्यालय में अलग-अलग प्रकार के शिक्षक होते हैं शिक्षा के कार्य स्वरूप समान रहने और सेवा के नियमावली अलग-अलग रहने से शिक्षकों के मन में तनाव बना रहता है, जिसके परिणाम स्वरूप बच्चों की शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

अस्थाई रूप से नियोजित शिक्षक कार्य तो करते हैं, लेकिन सामान्य कार्य सेवा देने के बावजूद भी उनकी नियोक्ता या संबंधित विभाग के द्वारा समान सुविधा नहीं मिलने के कारण उनको खुद के कार्य से संतुष्टि नहीं मिलती है। जिसके फलस्वरूप वे अपने ही कार्य कुशलता के साथ नहीं कर पाते हैं; उन्हें कार्य करने के लिए अभिप्रेरणा नहीं मिलती है, जिसका परिणाम यह होता है कि शिक्षक मानसिक रूप से भी अपने आप को तनावमुक्त नहीं रख पाते हैं। नियोजित शिक्षक का वेतन समान स्थाई शिक्षक के तुलना में काफी कम होता है जिससे उनकी पारिवारिक स्थिति संतोषप्रद नहीं रहती है। जिसका प्रभाव उनकी कार्य निष्पादन क्षमता पर भी पड़ता है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव बच्चों के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और शिक्षा की गुणवत्ता पर वर्तमान परिवेश में दिखा जा रहा है।

शिक्षक के संदर्भ के कार्य संतुष्टि :-

कार्य संतुष्टि दो शब्दों से मिलकर बना है प्रथम कार्य तथा द्वितीय संतुष्टि जिसका अर्थ का किया जाने वाला कार्य तथा संतुष्टि का अर्थ है होता है संतोष अथवा प्रसन्न इस प्रकार कार्य संतुष्टि का शाब्दिक अर्थ अपने कार्य अथवा पेशे से प्राप्त होने वाला आनंद या संतोष है, संतुष्टि एक आंतरिक गुण है बाह्य नहीं इसका संबंध मनुष्य के भावात्मक पक्ष से है हालांकि संतुष्टि का पारामीटर बहुत ही अनिश्चित है अनेक व्यक्ति ऐसे भी होते है। जो श्रेष्ठ अवस्थाओं में भी असंतुष्ट रहते हैं और इसके विपरीत ऐसे भी अनेक व्यक्ति होते हैं जो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने कार्य से संतुष्ट नजर आते हैं इन सभी के बावजूद भी यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि संतुष्टि की भावना के मूल में भी कुछ प्रवृत्ति मूलक और भौतिक परिस्थितियाँ होती है। कार्य संतुष्टि का दूसरा आधार भौतिकता भी है शिक्षक अपनी योग्यता और अपनी क्षमता के अनुरूप अपने शिक्षण प्रक्रिया को बहुत तन्मयता के साथ पूरी करते हैं। उनके उन्हें पूरे जीवन काल के ज्ञान और अनुभव को कक्षा-कक्ष में शिक्षार्थियों को शिक्षित करने मे लगाते हैं। शिक्षक की मूल पूंजी उसका ज्ञान और परिश्रम होता है। हालांकि सभी प्रकार के कार्य-स्वरूप और सेवा-क्षेत्र में ज्ञान और कौशल का ही महत्व होता है, लेकिन यहाँ शिक्षा की महत्ता इसलिए अत्यधिक है कि यहां कार्य सेवा के फलस्वरूप किसी मूर्त वसतु को उत्पादित नहीं किया जाता है, छात्रों के ज्ञान को विकसित किया जाता है उनके बौद्धिक क्षमता को विकसित किया जाता है तथा उनके सामाजिक चेतना को विकसित किया जाता है। क्योंकि व्यक्ति अपने आप में अपूर्व है, जिसमें बुद्धि विवेक चिंतन क्षमता अलग-अलग होती है, वैसे ही शिक्षक अपनी शिक्षण क्षमता और कुशल कला-कौशल और अपने शिक्षण-कौशल का प्रयोग कर शिक्षार्थियों को ज्ञान प्रदान करते हैं, और समाज के लिए योग्य मानव संसाधन के रूप में विकसित करते हैं। इतने महत्वपूर्ण कार्य को करने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षकों की मनोदशा स्वस्थ्य एवं ऊर्जावान हो। उनकी कार्य क्षमता को संतुष्टि रूपी सकारात्मक ऊर्जा नहीं मिलेगी तब तक उनके कार्य-क्षमता और कार्य अभिप्रेरणा का सही रूप में प्रयोग नहीं कर पाएंगे। शिक्षको की मनोदशा हमेशा तनावपूर्ण रहेगी यदि उसके घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहेगी उनकी आवश्यक आवश्यकता पूरी नहीं होने से उनकी सामाजिक-प्रतिष्ठा आर्थिक-स्थिति नियमित शिक्षक की भांति नहीं रह पाएगी। शिक्षकों के कार्य संतुष्टि का प्रत्यक्ष प्रभाव उनकी कार्य क्षमता पर भी पड़ती है। शिक्षक के शिक्षण की गुणवत्ता के ह्रास का कहीं न कहीं कारण शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि भी है। कार्य-संतुष्टि होने से उनके कार्यों का प्रभाव शिक्षण-प्रक्रिया पर पड़ेगी जिसका प्रत्यक्ष संबंध शिक्षार्थियों से है।

कार्य-अभिप्रेरणा के संदर्भ में :-

अभिप्रेरणा का अर्थ उन शक्तियों का समूह से है, जो किसी संगठन में एक व्यक्ति को काम प्रारंभ करने तथा उस पर बने रहने के लिए प्रेरित करता है। अमेरिका जनरल फूड कॉपोरेशन के भूतपूर्व अध्यक्ष ''क्लेरेन्स फ्रांसिस'' के शब्दों में, आप किसी व्यक्ति का समय खरीद सकते हैं, किसी विशेष स्थान पर उसकी शारीरिक स्थिति को खरीद सकते हैं किंतु किसी व्यक्ति के उत्साह को उसकी पहली शक्ति को अथवा उसकी वफादारी को नहीं खरीद सकते हैं। कर्मचारियों से अधिक कार्य लेने के लिए उन्हें नियमित रूप से प्रेरित करना आवश्यक है। और ऐसे प्रेरक शक्ति ही अभिप्रेरणा है। अर्थात अभिप्रेरणा एक कर्मचारी को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, जिसके परिणाम स्वरूप कार्य-निष्पादन अच्छा हो सके।

एक शिक्षक चाहे क्यों ना वह अपने विषय में ज्ञाता हो अपने विषय में हर प्रकार के शिक्षण-कौशल में निपुणता हासिल की हो, सेवा-भाव और निष्ठा से अपने कार्य को निर्बाध तरीके से करता है, जिससे एक अच्छे समाज और राष्ट्र का निर्माण हो सके, क्योंकि एक शिक्षक ही अपने ज्ञान अनुभव और चिंतन से

व्यक्ति के सोचने-समझने और संज्ञानात्मक प्रत्यय को बदलकर सही दिशा प्रदान करता है, लेकिन यह संभव तभी हो सकता है जब शिक्षक मानसिक रूप से स्वस्थ होकर तनाव मुक्त वातावरण में अपना कार्य करें जब तक शिक्षक आर्थिक सामाजिक पारिवारिक जिम्मेदारियों के निर्वहन एक सामान्य नियमित शिक्षक की भांति नहीं कर पाएगा तो वह अपने कार्य निष्पादन के लिए आत्म-अभिप्रेरित नहीं होगा यह तो वही बातें होगी सामने अनेक समस्याएँ हो और एक तरफ कर्तव्यों का निर्वहन, वैसे में कहीं ना कहीं वह उतनी क्षमता से अपना कार्य नहीं कर सकेगा। इस पर कई रिसर्च पहले भी हो चुके हैं। दो समूह पर शोध किया गया। एक ग्रुप को तनाव मुक्त वातावरण अनुकूल परिस्थिति प्रदान किया गया और दूसरे ग्रुप को तनावपूर्ण वातावरण और अनुप्रयुक्त परिस्थिति में कार्य करवाया गया जिसमें कार्य अभिप्रेरणा की कमी पाई गई इसका परिणाम उनके कार्य-निष्पादन क्षमता पर भी पड़ी। इसलिए अभिप्रेरणा कर्मचारियों को अधिकाधिक कुशलतापूर्वक और अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। कर्मचारियों में मनोबल को ऊँचा उठाना उनमें आत्मविश्वास और निष्ठा की भावना पैदा करना कर्मचारियों की सामाजिक-आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा करना तथा उन्हें यथासंभव संतुष्टि प्रदान करना। मानवीय संसाधनों का सदुपयोग करना तथा संस्था के लक्ष्यों की प्राप्ति केवल अभिप्रेरणा के माध्यम से ही संभव है।

बच्चों पर शिक्षा का प्रभाव :

व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का महत्व वही है जैसे भोजन के बगैर शारीरिक विकास संभव नहीं है। वैसेही शिक्षा के बिना मानसिक विकास संभव नहीं है शिक्षा ही व्यक्तित्व के निर्माण की मजबूत आधारशिला रखी जा सकती है, जिस पर भविष्य का मजबूत नीव रख सकते हैं जिस पर चुनौतियों के आंधी तूफान आने पर भी अडिग होकर डट कर खड़े रहने और अपने अस्तित्व को बरकरार रख सके। शिक्षा का संबंध केवल अच्छे अंक से ही नहीं होता है बल्कि उसका उद्देश्य तो उसके ज्ञान, समझ, अनुप्रयोग, संश्लेषण, मूल्यांकन की क्षमता को बढ़ाना है यह तभी संभव है जब एक कुशल योग्य ज्ञानवान शिक्षक पथ प्रदर्शक के माध्यम से दिशा निर्देश प्राप्त करें, लेकिन जब शिक्षक अपने कार्य को कुशलता पूर्वक प्रेरित होकर किए बगैर शिक्षा प्रदान करें यह उपरोक्त शैक्षिक लक्ष्यों को पाना संभव नहीं है, और संस्था के प्रति उड़ने लगा उत्पन्न करना मानवीय संसाधनों का सदुपयोग करना तथा संस्था के लक्ष्यों की प्राप्ति केवल अभिप्रेरणा के माध्यम से ही संभव है।

बच्चों पर शिक्षण का प्रभाव:

व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का महत्व वही है जैसे भोजन के बगैर शारीरिक विकास संभव नहीं है वैसे ही शिक्षा के बिना मानसिक विकास संभव नहीं है शिक्षा के माध्यम से व्यक्तित्व के निर्माण की मजबूत आधारशिला रखी जा सकती है, जिस पर भविष्य का मजबूत नीव रख सकते हैं, जिस पर चुनौतियों के आंधी तुफान आने पर भी अडिग होकर डट कर खड़े रहने और अपने अस्तित्व को बरकरार रख सके। शिक्षा का संबंध केवल अच्छे अंक पाने से ही नहीं होता है बल्कि उसका उद्देश्य तो उसके ज्ञान, समझ, अनुप्रयोग, संश्लेषण, मूल्यांकन की क्षमता को बढ़ाना है यह तभी संभव है जब एक कुशल योग्य ज्ञानवान शिक्षक पथ, प्रदर्शक के माध्यम से दिशा निर्देश प्राप्त करें, लेकिन जब शिक्षक अपने कार्य को कुशलता पूर्वक प्रेरित होकर किए बगैर शिक्षा प्रदान करें यह उपरोक्त शैक्षिक लक्ष्यों को पाना संभव नहीं है। जिसका प्रभाव बच्चों के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया उनकी शिक्षा की गुणवत्ता पर स्पष्ट और प्रत्यक्ष रूप से पड़ेगा। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया चाहे किसी भी रूप में किसी भी परिस्थिति में संपन्न की जाए इसका लक्ष्य हमेशा विद्यार्थियों के उनके अध्ययन कार्य में सहायता करना तथा उनकी योग्यताओं और क्षमताओं के विकास में योगदान देना

होता है। आज हम प्रत्यक्ष रूप से यह देख भी रहे हैं आज बच्चों के नैतिक-मूल्यों चारित्रिक-मूल्यों का ह्रास हो रहा है ना तो शिक्षक इन चीजों को सिखा पाने में सक्षम हो रहे हैं और ना ही बच्चे शिक्षक को इस रूप में आदर दे रहे हैं। शिक्षक की ओर से आज हर चीज व्यावसायिक हो गया है अर्थात जितना पारितोषिक उतना ही कार्य करेंगे। और बच्चों की ओर से शिक्षक क्या हमें निशुल्क में पढ़ाते हैं, बल्कि तनख्वाह पाते हैं, आज नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। शिक्षा प्राप्त कर अच्छे अंक तो प्राप्त कर ले रहे हैं, लेकिन उनकी समस्त चिंतन और विवेक भौतिक हो गया है। यह कतई नहीं कहा जा सकता है कि बच्चे की नैतिक मूल्यों के ह्रास में शिक्षक ही सिर्फ जिम्मेदार हैं। जिम्मेदार तो पूरा वातावरण है। परिवार से लेकर पड़ोस तक, समाज से लेकर प्रशासन तक, लेकिन समाज की ओर से उसे सुधारने की जिम्मेदारी शिक्षक पर ही दी जाती है। अतः शिक्षक के कार्य-संतुष्टि और कार्य-अभिप्रेरणा के अभाव में बच्चों के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, गुणात्मक शिक्षा पर भी पड़ रहा है।

निष्कर्षः

संविदा आधारित नियोजित शिक्षकों में कार्य-संतुष्टि ओर कार्य-अभिप्रेरणा की कमी पाई जाती है। शिक्षा के माध्यम से हम मानव संसाधन का निर्माण करते हैं जो कि कोई भौतिक वस्तु नहीं है, जिसे अन्य उत्पादन कार्यों की तरह कर सकें,बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में मानव संसाधन, एक व्यक्तित्व के विकास का माध्यम है। व्यक्तित्व के भीतर बौद्धिक क्षमता चारित्रिक गुणों, संज्ञानात्मक संप्रत्यय को विकसित करने वाला एक शिक्षक ही है, जो अपनी क्षमता से इन सभी गुणों का विकास करता है। ''जॉन ऐडम्स'' ने भी कहा था कि शिक्षक ही व्यक्ति समाज राष्ट्र एवं विश्व का निर्माण की सक्रिय सहभागिता के किसी राष्ट्र की वर्तमान एवं भविष्य निर्माण एवं विकास संभव नहीं है। एक शिक्षक उपरोक्त जिम्मेदारियों को तभी पूरी निष्ठा के साथ कर सकता है, जब वह मानसिक रूप से प्रसन्न, संतुष्ट और स्वथ्य होकर कार्य करने के लिए भी प्रेरित हो अर्थात् कार्य करने की तत्परता हो। संविदा आधारित नियोजित शिक्षक वेतन एवं अन्य सेवा शर्तों में असमानता के कारण अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों और सामाजिक प्रतिष्ठा को नहीं प्राप्त कर पाते हैं। हीनता से ग्रस्त होकर अपने कार्यों में तत्परता और तल्लीनता नहीं ला पाते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि संविदा आधारित नियोजित शिक्षक एक वैकल्पिक व्यवस्था हो सकती है परंतु स्थाई नहीं। इसका प्रभाव शिक्षक पर, शिक्षा पर, समाज पर, बालक पर, उसके स्वर्णिम भविष्य पर कहीं न कहीं निराशा और अनिश्चितता की ओर ले जाने का कार्य करेगा। जिससे एक शिक्षक द्वारा समाज एवं राष्ट्र का कल्याण नहीं हो सकता है। नियोजित शिक्षक एक वैकल्पिक व्यवस्था हो सकती है परंतु स्थाई नहीं। इसका प्रभाव शिक्षक पर शिक्षा पर समाज पर बालक पर उनके स्वर्णिम भविष्य पर कहीं न कहीं निराशा और अनिश्चितता की अंधकार की ओर ले जाने का कार्य करेगा, जिससे एक व्यक्ति, एक समाज का, राष्ट्र का, कल्याण नहीं हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. ओझा राजकुमार औद्योगिक मनोविज्ञान अग्रवाल पब्लिकेशन पंचम संस्करण पेज नंबर 234-244
2. मंगल एस.के. 2002 स्टैटिक्स इन साइकोलॉजी एंड एजुकेशन प्रेंटिस हॉल पब्लिकेशन नई दिल्ली
3. कुमार प्रमोद 2008 भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएँ,संजय पब्लिकेशन आगरा पृष्ठ संख्या 272
4. पांडेय कल्पता 2007 शिक्षा मनोविज्ञान, टाटा मैकग्रा हिल पब्लिकेशन,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-10, 104
5. अरुण कुमार (2014) शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर, आई.एस.बी.एन नंबर 13: 978-7709-986-7